R.N. College Majhi
By. AG [illegible] Kumar.

ज्वालामुखी

स्थलरूप, बाह्य / आंतरिक

ज्वालामुखी क्रिया द्वारा निर्मित स्थलरूप :- (i) बाह्य स्थलरूप
(ii) आंतरिक स्थलरूप

1. सिंडर शंकु :-

एक ज्वालामुखी क्रिया के दौरान केवल पाइरोक्लास्ट निकलते और लावा नली में ही फँसा रह जाता तो जो बाहर निकलते हैं उसे सिंडर शंकु कहते हैं। जैसे:- मैक्सिको का माउंट जोरल्लो

केन्द्रीय विस्फोट द्वारा निर्मित स्थलरूप

2. मिश्रित शंकु :-

जब ज्वालामुखी क्रिया के दौरान जब लावा तथा पाइरोक्लास्ट बारी-2 से जब परत जमा होते तो मिश्रित शंकु का निर्माण होता है।

जैसे:- जापान का फ्यूजीयामा

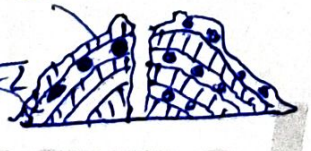

बाह्य स्थलरूप : स्थायी रूप नहीं होते निर्भर

↳ लावा और विखंडित पदार्थों के अनुपात और उद्गार की प्रकृति पर निर्भर करते हैं।

उद्गार की प्रक्रिया के आधार पर बाह्य स्थलाकृति को दो प्रकार में विभक्त करते हैं—

(i) केन्द्रीय उद्गार द्वारा निर्मित स्थलरूप

(ii) दरारी उद्गार द्वारा निर्मित स्थलरूप

विशेषताएँ :- अगर उसी परत लावा की हो तो अपरदन धीरे-2 बल्कि पाइरोक्लास्ट की हो तो अपरदन तेजी से

पाइरोक्लास्ट = चट्टानों के टुकड़े

MegazolidPLUS

3. परपोषित शंकु

जब किसी ज्वालामुखी क्रिया के दौरान शंकु का आकार और ऊँचाई अधिक बढ़ जाता है और पुनः फिर से ज्वालामुखी उद्गार होता है तो लावा ऊपर उठ नहीं पाता तो उपनली का निर्माण हो जाता है एवं उपशंकु का भी निर्माण हो जाता है लेकिन इसमें लावा मुख्य नली से ही आता है अतः इसे परपोषित शंकु कहा जाता है।

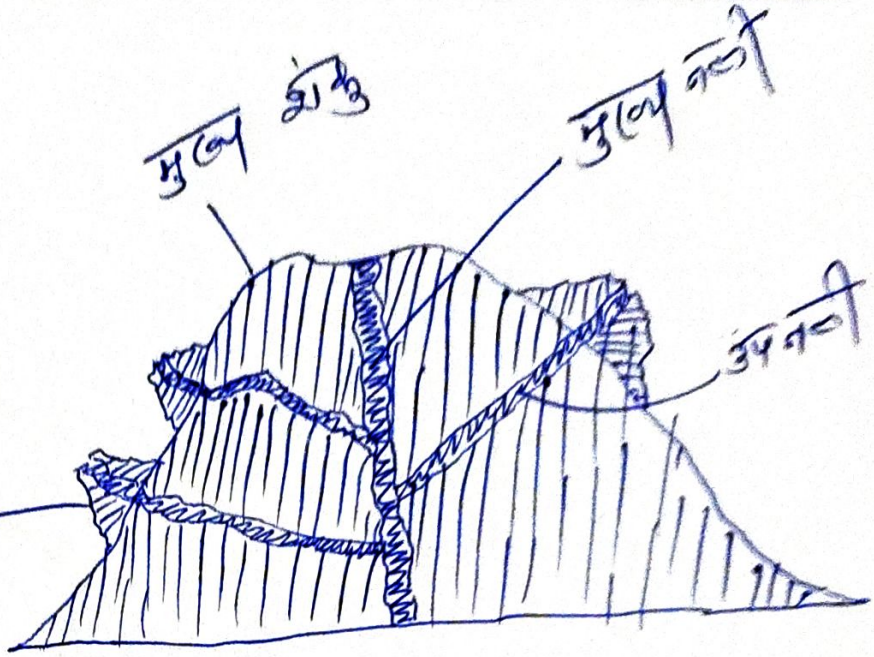

उदाहरण - रॉकीज पर्वत पर माउंट शास्ता है जिसपर माउण्ट शास्तिना

4. शील्ड शंकु

जब किसी ज्वालामुखी क्रिया के दौरान लावा में सिलिका की मात्रा कम, हो वह तरल एवं क्षारीय होता। ऐसा तरल एवं क्षारीय छिद्र के पास जमा नहीं हो पाता और यह विस्तृत क्षेत्र पर गुम्बद जैसा बनता है तो इसे शील्ड शंकु कहते हैं। एवं इसे क्षारीय लावा शंकु भी कहते हैं

गुंबद की तरह तरल लावा क्षारीय लावा

5. एसिड लावा शंकु :-

जब ज्वालामुखी क्रिया के दौरान ज्वालामुखी के छिद्र से निकलने वाला लावा में सिलिका की मात्रा अधिक होती है जिससे लावा काफी गाढ़ा एवं चिपचिपा होता है जिसके फलस्वरूप लावा छिद्र ज्वालामुखी के छिद्र के पास ही जमा हो कर ठोस हो जाता है जिससे तीव्र ढाल वाले शंकु का निर्माण होता जिसे हम एसिड लावा शंकु या स्ट्राम्बोली लावा शंकु कहा जाता है।

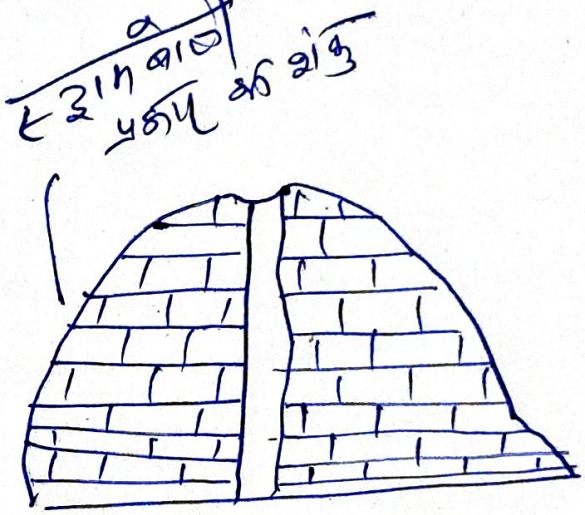

6. डॉट गुम्बद या प्लग

जब ज्वालामुखी क्रिया होने के बाद जब नली का लावा ठोस होने के फलस्वरूप खड़ा हो रह जाता है एवं कुआयन शंकु का अपरदन हो जाता है तो डॉट गुम्बद का निर्माण होता है इसे भी कह सकते हैं मिश्रित शंकु के साथ होती घटना होने पर

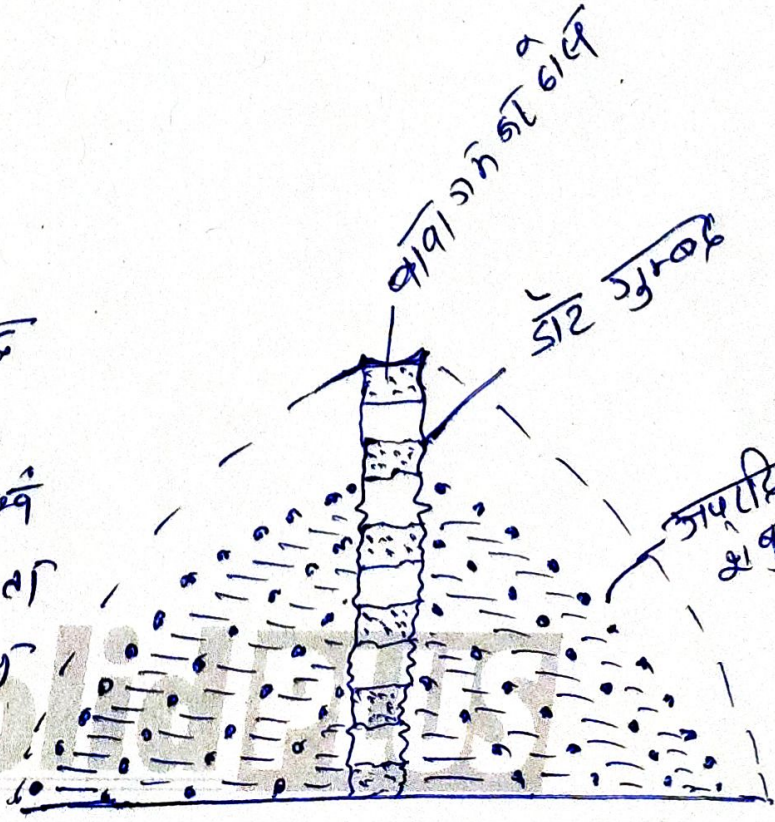

7. क्रेटर तथा काल्डेरा

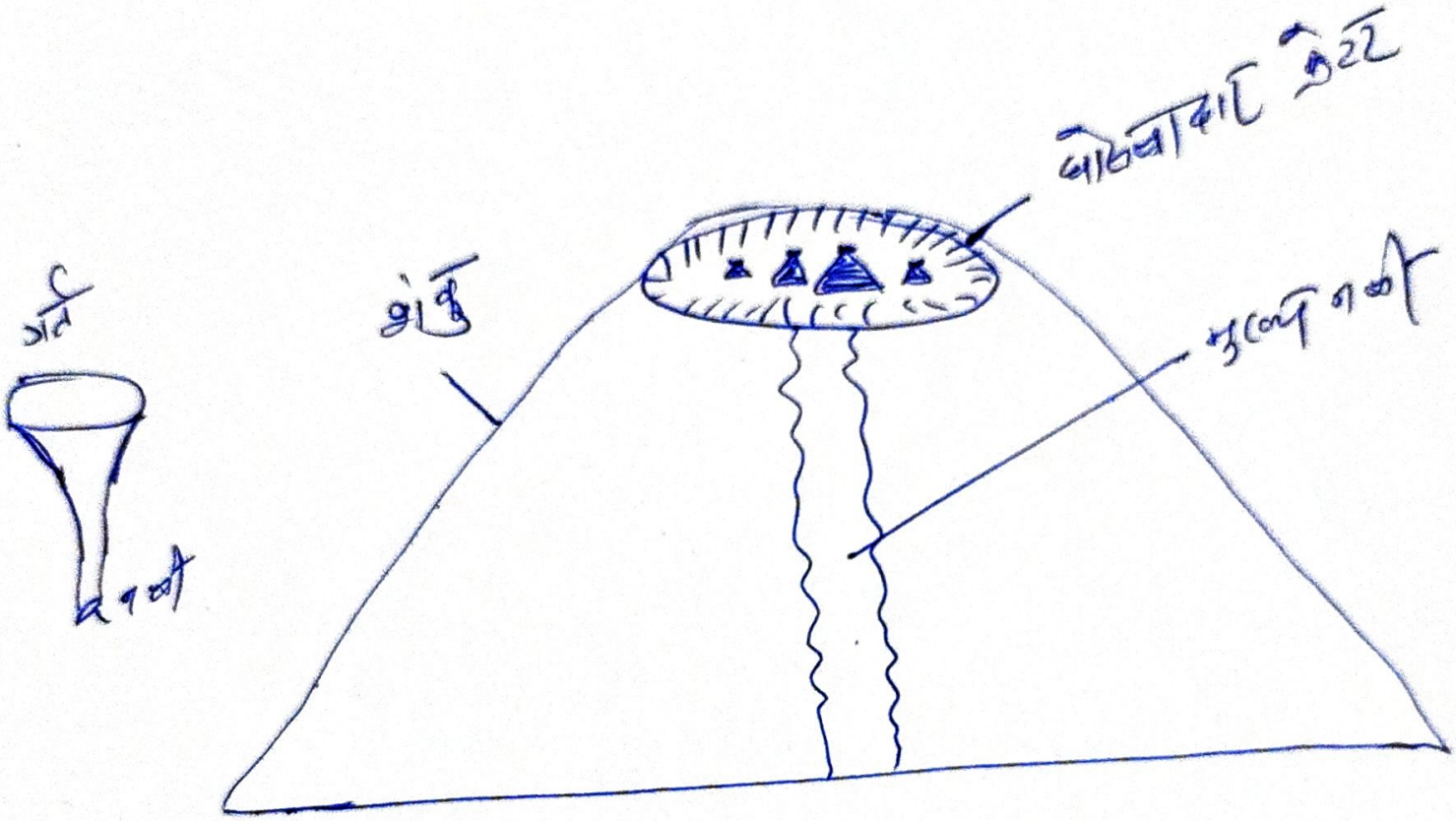

ज्वालामुखी क्रिया के दौरान छिद्र का गर्त छोटा हो तो तो उसे क्रेटर कहते हैं जिसकी ऊँचाई एवं व्यास 1000 फीट

जब क्रेटर के पुन: विस्फोट होने से छिद्र बड़ा होने पर काल्डेरा का निर्माण होता है।

Megazolid PLUS